DR. RANJEET KUMAR
Deptt. Of History
H. D. Jain College Ara
E-Notes, M.A , sem.- 2, unit-5

गुट-निरपेक्ष आंदोलन **(Non-Aligned Movement – NAM)**

परिचय

गुट-निरपेक्ष आंदोलन (NAM) वह अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक आंदोलन है जिसका लक्ष्य था बड़े शक्तिशाली राष्ट्रों के किसी भी सैन्य या राजनीतिक गठबंधन से दूर रहकर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाना। यह नीति विशेष रूप से शीत युद्ध के समय विकसित हुई, जब दुनिया द्विध्रुवीय शक्ति संतुलन (अमेरिका बनाम सोवियत संघ) के नीचे दब गई थी।

शीत युद्ध के दौरान कई नई स्वतंत्र हुई अफ्रीकी, एशियाई और लैटिन अमेरिकी देशों ने महसूस किया कि महाशक्तियों के प्रभाव में आने से उनकी राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य स्वतंत्रता खतरे में पड़ सकती है। इन्हीं चिंताओं ने NAM को जन्म दिया।

NAM का इतिहास

पृष्ठभूमि

1940-50 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कई देशों ने औपनिवेशिक शासन से आजादी पाई। लेकिन नई आज़ाद हुई शक्तियों को वैश्विक राजनीति में बराबर स्थान नहीं मिला। शीत युद्ध की भयावह स्थिति में, छोटे और मध्यम शक्तियों के लिए यह चुनना मुश्किल हो गया कि वे अमेरिका के साथ गठबंधन करें या सोवियत संघ के साथ।

इन परिस्थितियों में ऐसे नेताओं की सोच विकसित हुई जो चाहते थे कि यह देश किसी बड़े गठबंधन या संयुक्त सैन्य संगठन का हिस्सा न बनें, बल्कि विश्व राजनीति में अपनी स्वतंत्र स्थिति बनाए रखें। यही विचार आगे चलकर NAM की नींव बना।

बैण्डुंग सम्मेलन (1955)

ज्यादातर इतिहासकार इसे NAM का औपचारिक पूर्व-स्थान मानते हैं। इस सम्मेलन में 29 एशियाई और अफ्रीकी देशों ने भाग लिया और पांच मूलभूत सिद्धांतों पर सहमति व्यक्त की जिन्हें पंचशील कहा गया। ये सिद्धांत बाद में NAM के मूल सिद्धांतों की आधारशिला बन गए।

पहला NAM शिखर सम्मेलन (1961)

आधिकारिक रूप से गुट-निरपेक्ष आंदोलन की शुरुआत सितंबर 1961 में बेलग्रेड (तब युगोस्लाविया) में हुई शिखर सम्मेलन से मानी जाती है। इस सम्मेलन में दुनिया भर से लगभग 25 देशों के प्रमुख नेताओं ने हिस्सा लिया और आंदोलन को औपचारिक रूप दिया।

NAM के संस्थापक नेता और उनके योगदान

गुट-निरपेक्ष आंदोलन के मुख्य संस्थापक और प्रमुख प्रवर्तक थे:

1. डॉ. जवाहरलाल नेहरू (भारत)
नेहरू ने गुट-निरपेक्षता की नीति को न केवल भारत की विदेश नीति का केंद्र बनाया, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर विकसित देशों के दवाब से बचने का मार्ग बताया।

2. जोसिप ब्रोज़ टिटो (युगोस्लाविया)
टिटो ने यूरोप से आते हुए इस विचार को NAM को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई।

3. हमद अल-नासर (मिस्र)
मिस्र के नेता ने NAM में औपनिवेशिकता विरोधी संघर्ष और विरोधी साम्राज्यवाद को प्रमुखता दी।

4. स्वकार्नो (इंडोनेशिया)
इंडोनेशिया ने एशियाई-अफ्रीकी सहयोग को बढ़ावा दिया और NAM के विचार को संगठित करने में योगदान दिया।

5. क्वामे नक्रूमा (घाना)
अफ्रीकी महाद्वीप में स्वतंत्रता आंदोलन को NAM के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय समर्थन देने में नक्रूमा का बड़ा योगदान रहा।

NAM के मूल सिद्धांत (Principles)

गुट-निरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांत आंदोलन की आत्मा हैं। इन्हें कुछ प्रमुख बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. संप्रभुता और रणनीतिक स्वतंत्रता

हर देश को अपने निर्णय खुद लेने का अधिकार है, बिना बाहरी दबाव या हस्तक्षेप के।

2. क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान

दूसरे देशों की सीमाओं और स्वायत्तता का सम्मान रखना अनिवार्य है।

3. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व

राजनीतिक मतभेदों को संवाद और कूटनीति के जरिए सुलझाने की नीति अपनाना।

4. किसी भी महाशक्ति ब्लॉक का हिस्सा न बनना

NAM का मूल लक्ष्य किसी भी परमाणु या सैन्य गठबंधन में शामिल न होना था।

5. आर्थिक और सामाजिक सहकार्य

विकासशील देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना ताकि वैश्विक आर्थिक असमानता को कम किया जा सके।

इन सिद्धांतों का उपयोग NAM के सभी शिखर सम्मेलनों और घोषणाओं में प्राथमिक मानदंड के तौर पर किया गया।

NAM के उद्देश्य (Objectives)

NAM के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

स्वतंत्र वैश्विक पहचान प्राप्त करना

छोटे और मध्यम देशों को यह सुनिश्चित करना कि वे किसी महाशक्ति के प्रभाव में न आएं बल्कि अपनी स्वतंत्र विदेश नीति निर्माता के रूप में कार्य करें।

साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विरोध

NAM साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और नस्लभेद के विरुद्ध था, और दुनिया भर के स्वतंत्रता संग्रामों का समर्थन करता था।

विश्व शांति को बढ़ावा देना

आण्विक युद्ध और हथियारों की दौड़ को रोकने के लिए NAM ने हमेशा शांतिपूर्ण समाधान और न्यूनतम सैन्य तनाव की वकालत की।

संयुक्त राष्ट्र को सुदृढ़ करना

NAM ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय न्याय स्थापित करने में मदद की।

नया अंतरराष्ट्रीय आर्थिक आदेश (New International Economic Order)

NAM ने वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में न्याय, समानता और विकास के लिए जोर दिया ताकि गरीब और विकासशील देशों को अवसर मिल सके।

NAM की संरचना और कार्यप्रणाली

NAM एक पारंपरिक संगठन नहीं है जैसे संयुक्त राष्ट्र या अफ्रीकी संघ, बल्कि यह एक आंदोलन है जिसमें कोई स्थायी सचिवालय या बड़े कार्यालय नहीं हैं।

• शिखर सम्मेलन: करीब हर तीन साल में सदस्य राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष या प्रमुख प्रतिनिधि मिलते हैं।
• निर्णय प्रक्रिया: सभी निर्णय समझौते के आधार पर लिए जाते हैं, मतों के आधार पर नहीं।
• समन्वय ब्यूरो: संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय (न्यूयॉर्क) में NAM का एक समन्वय समूह होता है।

हर देश के प्रतिनिधि की बराबरी होती है और निर्णय में किसी एक देश को अधिक वोटिंग शक्ति नहीं दी जाती।

NAM के प्रमुख शिखर सम्मेलनों का सार

NAM की इतिहासिक बैठकों ने वैश्विक राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय सम्मेलनों की संक्षेप जानकारी इस प्रकार है:

BELGRADE SUMMIT (1961)

पहला NAM सम्मेलन जहाँ सदस्य राष्ट्रों ने औपचारिक रूप से एक साझा मंच की घोषणा की और गैर-संरेखित नीति को विस्तृत किया।

C∞airo और Havana Summit (1970s)

इन सम्मेलनों में आधुनिक NAM के सिद्धांतों को और मज़बूत किया गया। विशेष रूप से हैवाना घोषणा (1979) में स्पष्ट रूप से NAM के लक्ष्य को स्वाभिमान, स्वतंत्रता और संघर्ष के खिलाफ के रूप में परिभाषित किया गया।

भारत की भूमिका

भारत NAM में केवल एक सदस्य नहीं, बल्कि आंदोलन के मुख्य संस्थापकों और दिशा निर्धारकों में से एक रहा है।

नेहरू की सोच

– जवाहरलाल नेहरू ने NAM को न केवल एक राजनीतिक नीति बल्कि वैश्विक नैतिकता का हिस्सा माना।
– उन्होंने इसे आधुनिक भारत की विदेश नीति की पहचान कहा।

NAM के माध्यम से भारत का वैश्विक नेतृत्व

भारत ने NAM के मंच का उपयोग कर:
• औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आवाज उठाई
• आत्मिक निर्भरता और राष्ट्रीय संप्रभुता को बढ़ावा दिया
• शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन किया
• संयुक्त राष्ट्र में विकासशील देशों के हितों के लिए कोशिश की

भारत ने NAM के माध्यम से अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में आज़ादी के संघर्षों का समर्थन किया और संयुक्त राष्ट्र में बेहतर प्रतिनिधित्व की मांग उठाई।

NAM की उपलब्धियाँ

NAM ने शीत युद्ध की राजनीति के दौरान कई सकारात्मक भूमिका निभाई:

1. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का संदेश: देशों को शक्ति संघर्षों से अलग रखा।

2. उपनिवेशवाद विरोध: अफ्रीका जैसे महाद्वीपों में नस्लभेद और औपनिवेशिक प्रथाओं का विरोध।

3. विश्व शासन में विकासशील देशों की भागीदारी: संयुक्त राष्ट्र की कार्यप्रणाली में विकासशील देशों के मुद्दों को उठाया गया।

4. आर्थि-सामाजिक न्याय: आर्थिक न्याय और NIEO (नया अंतरराष्ट्रीय आर्थिक आदेश) की सोच को फैलाया गया।

आलोचनाएँ और चुनौतियाँ

NAM की आलोचनाएँ भी कई बार सामने आई हैं:

1. प्रभावी निर्णय की कमी: क्योंकि यह आंदोलन किसी कठोर संगठनात्मक ढांचे पर आधारित नहीं है, कई बार निर्णय स्थिर नहीं रहे।

2. क्षेत्रीय संघर्षों को टालने में विफल: NAM शांति का संदेश देने के बावजूद भारत-चीन संघर्ष, भारत-पाक युद्ध जैसे क्षेत्रीय विवादों को रोक नहीं पाया।

3. आधुनिक वैश्विक राजनीति में प्रासंगिकता: शीत युद्ध खत्म होने के बाद NAM की भूमिका और प्रभाव पर सवाल उठे हैं, क्योंकि कई देशों की विदेश नीति अब अन्य शक्तियों के साथ भागीदारी पर आधारित है।

समकालीन प्रासंगिकता

आज भी NAM का मंच उपयोगी है, खासकर:

• विकासशील देशों की आवाज़ को एक साझा मंच देना
• वैश्विक शांति, आर्थिक न्याय और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर साझा बयान देना
• नई वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की मांग

सारांश

गुट-निरपेक्ष आंदोलन (NAM) एक ऐतिहासिक और स्थायी वैश्विक विचार रहा है जिसने छोटे देशों को अपने हितों को एक मजबूर मंच पर रखने का अवसर दिया। शीत युद्ध के समय इसका प्रभाव सबसे अधिक था, लेकिन आज के बदलते वैश्विक संदर्भ में भी इसका संदेश स्वतंत्रता, समानता, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और साझा विकास प्रासंगिक है।